www.thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : ०२ ● १० जनवरी २०१७ पौष शुक्ल पक्ष त्रयोदशी संवत् २०७३ ● दयानन्दाब्द १६२ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११७

ऋग्वैदिक भारतीय समाज

ऋग्वेद के आइने में

- सूर्य देव चौधरी

वेदों की उत्पत्ति के बारे में वैदिक एवं पौराणिक दोनों भारतीय मान्यताओं में समानता यह है कि वेद सृष्टि के आदि में ईश्वरीय ज्ञान का प्रतिफल है। इन दोनों मान्यताओं में अन्तर यह है कि वैदिक मान्यता के अनुसार चारों वेद का ज्ञान चार ऋषियों के हृदय में ईश्वरीय प्रेरणा से हुए, जब कि पौराणिक मान्यता के अनुसार चारों वेद ब्रह्मा के चारों मुख से एक ही समय निःसृत हुए। पाश्चात्य मान्यता इससे भिन्न है। इसके अनुसार वेद कुछ हजार वर्ष पहले की रचना है और उसमें भी ऋग्वेद को सबसे प्राचीन और शेष तीन वेदों को बाद की रचना मानी जाती है। हलांकि पश्चिमी विद्वान और उनके अनुगामी भारतीय विद्वान अभी तक वेदों का निश्चित काल–निर्धारण करने में असफल रहे हैं।

पाश्चात्य विद्वान और उनके अनुगामी भारतीय विद्वान ऋग्वेद को प्राचीनतम मानकर उसके आधार पर अपनी पूर्वाग्रह ग्रसित बुद्धि से तत्कालीन समाज की जो रूप– रेखा प्रस्तुत करते हैं उसके अनुसार आर्य बाहर से आक्रान्ता के रूप में भारत आए। वे कबीलाई अवस्था में रहते थे और भोजन की खोज में इधर–उधर घूमते रहते थे। इसी क्रम में वे परस्पर तथा दूसरों से लड़ाई–झगड़ा भी करते थे। उनका कहीं स्थायी निवास नहीं था क्योंकि उन्हें गृह–निर्माण की विद्या नहीं आती थी और न ही उन्हें कृषि–कर्म का ज्ञान था। उस समय न तो समाज का वर्गीकरण हुआ था और न ही विवाह–प्रथा का प्रचलन। कहने का तात्पर्य है कि ऋग्वैदिक समाज अज्ञानी, असभ्य, जंगली, अविकसित, पशुचारक और कबीलाई अवस्था में था।

कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और दर्पण में प्रतिविम्ब वैसी ही दिखती है जैसी कि वस्तु रहती है। ऋग्वेद आर्यों का साहित्य हैं अतः ऋग्वेद के आधार पर आर्यों के ज्ञान–विज्ञान और रहन–सहन की सच्ची प्रतिबिम्ब देखी जा सकती है। हालांकि वेद में किसी लौकिक इतिहास का वर्णन नहीं है, फिर भी थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं। ऋग्वेद में वर्तमान ज्ञान का स्तर यदि

शेष पृष्ठ -६ पर

वेदामृतम्

विमच्छ्रथाय रशनामिवाग", ऋध्याम ते वरुण खामृतस्यः"।
मा तन्तुश्छेदि वयतो धियं में", मा मात्रा शार्यपसः पुर ऋतोः"।।

ऋग् २.२८.५

हे भक्तों को वरने और भक्तों से वरे जाने वाले पाप-निवारक वरुण परमात्मन्! तुम मेरी पाप-रज्जु को मुझसे विशिथिल कर दो। जैसे गाय के बछड़े को रस्सी से बाँध दिया जाता है, वैसे ही तुम्हारा वत्स मैं पाप से बँध गया हूँ। रस्सी का बंधन ढीला करते ही बछड़ा रस्सी से खुलकर गाय के पास पहुँच उसका मधुर स्तन्यपान करने लगता है। मैं भी तुम्हारे पास पहुँचने के लिए बेचैन हो रहा हूँ, पर यह पाप का बन्धन मुझे तुम्हारे समीप नहीं पहुंचने दे रहा है। बन्धन की जकड़ प्रयत्न करने पर भी मुझसे नहीं खुल पा रही है। हे मेरे स्वामी! तुम उस बन्धन को बस ढीला कर दो, आगे उसे झटका मारकर खोल देने का कार्य मैं स्वयं कर लूंगा! पाप-बन्धन से मुक्त होते ही मैं तुम्हारी सत्य की नदी में से सत्य का स्वच्छ सलिल पीने के लिए स्वयं दौड़ा चला आउंगा। पहले भी अनेक बार मैंने तुम्हारी सत्य की नदी में स्नान करने की और उसके अमृतमय सत्य-सलिल से अपनी प्यास बुझाने की अभिलाषा की है, किन्तु पाप के फन्दे से ऐसी बुरी तरह फँसा रहा हूँ कि जितना ही उससे छूटने का प्रयास करता रहा हूँ, उतना ही गाँठ और अधिक कस जाती रही है। अब तो हे प्रभु! मैं तुम्हारी ऋत की तरंगिणी के तीर पर पहुंचने के लिए विकल हो रहा हूँ। अतः पाप-बंधन से मुक्त होने में तुम मेरी थोड़ी-सी सहायता कर ही दो।

हे वरुणदेव! मैं 'धी' का पट बुन रहा हूँ, ज्ञान का ताना-बाना रहा हूँ। पर वह ज्ञान-पट पूर्ण नहीं हो पा रहा है। रह-रहकर तार टूट जाता है, और उस तार को जोड़ने में ही न जाने कितना समय नष्ट हो जाता है। ऐसी कृपा करो कि गुरु-चरणों में बैठकर की जाने वाली तथा स्वयं स्वाध्याय द्वारा होने वाली मेरी ज्ञान-साधना निर्विघ्न परिसमाप्त हो।

हे वरणीय परमात्मन्! मेरी कर्म-साधना को भी तुम पूर्ण करो! जो यज्ञिय कर्म मैंने प्रारम्भ किया है, वह समय से पूर्व बीच में ही विच्छिन्न न हो, अपितु उचित समय पर मैं उसकी पूर्णाहुति कर सकूँ।

साभार – वेदमञ्जरी

निर्भीक राष्ट्रवादी सन्यासी श्रद्धानन्द

–डा० धीरज सिंह

आर्य समाज फ्रीगंज आगरा एवं जिला सभा आगरा के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक २५ दिसम्बर, २०१६ को स्थान जयपुर हाउस आगरा में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह हजारों आर्य जनों की उपस्थित में मनाया गया। समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के कार्यवाहक प्रधान डा० धीरज सिंह व सत्यव्रत सामवेदी आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। समारोह को सम्बोधित करते हुए डा० धीरज सिंह जी ने कहा कि भारत के इतिहास में स्वामी श्रद्धानन्द जैसा राष्ट्र भक्त वैदिक शिक्षा को आधार मानकर उसे गुरूकुल प्रणाली से देश के युवाओं को शिक्षित करके उनके चरित्र निर्माण व वैदिक ऋचाओं

से परिचित कराने वाले निर्भीक सन्यासी थे। अंग्रेजी सरकार ने गुरूकुल कांगड़ी को देश भक्तों का कारखाना समझ कर हमेशा अपने गुप्तचरों द्वारा नजर रखी। सन् १६१४ में जब इंग्लैण्ड के भावी प्रधानमंत्री सर रैम्जे अपने साथी एण्ड्रूज के साथ गुरूकुल कांगड़ी आये और स्वामी श्रद्धानन्द से पूछा कि "सुना है इस गुरूकुल के जंगल में बम तैयार किये जाते हैं तो स्वामी जी ने अपने युवा ब्रह्मचारियों को दिखाते हुए कहा था कि "यही मेरे बम

हैं जो देश की आजादी से लेकर भारतीय संस्कृति की रक्षा का कार्य करेंगें। लौह पुरूष सरदार पटेल जी ने कहा था कि "सन १६१६ में दिल्ली के चांदनी चौक में निहत्थे सेनानियों पर अंग्रेज सिपाहियों ने जब संगीने तान दी थीं तो स्वामी श्रद्धानन्द ने

शेष पृष्ठ -५ पर

देवेन्द्रपाल वर्मा – प्रधान/संरक्षक
डॉ. धीरज सिंह – कार्यवाहक प्रधान
स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती – मंत्री/प्रधान सम्पादक
आचार्य वेदव्रत अवस्थी – सम्पादक

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

अन्ध भक्ति

आंग्ल नव वर्ष के प्रथम दिन उ०प्र० के वृन्दावन क्षेत्र के बाँके बिहारी मंदिर में देश–विदेश से आये दर्शनार्थियों की भीड़ अचानक बढ़ जाने से कई वृद्धों बच्चों व महिलाओं की हालत खराब हो गयी कई बेहोश हो गये तो कई दर्शनार्थियों को चिकित्सा के लिए ले जाना पड़ा। अचानक बढ़ी भीड़ को गलत तरीके से रोकने के कारण प्रशासन व पुलिस की लापरवाही भी सामने आ गयी।

नया साल सुखद शान्ति पूर्ण व्यतीत हो इस कारण भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन कर अपना जीवन सुखमय करने के चक्कर में तथा मंदिर में मोटी रकम चढ़ाने के बाद भी कई श्रद्धालू अपने हाथ–पैर तुड़वा बैठे इसे क्या कहा जाये। योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन से शिक्षा लेने के स्थान पर उनकी अन्ध भक्ति, चढ़ावा से पुजारियों आदि का जीवन अवश्य सुखमय व ऐश्वर्ययुक्त हो गया। लोगों का क्या यहाँ आते ही धक्के खाने। मंन्दिरों की अकूत आय से किसी गरीब व जरूरतमंद की मदद तो नहीं होती उलटे मंदिर की सीढ़ियों के पास सैकड़ों भिखारी बैठे अवश्य रहते हैं। हर साल मंदिरों में कोई न कोई घटना घटती है लोगों का जीवन संकट में पड़ जाता है, कई घायल हो जाते हैं, फिर भी लोगों का ज्ञान जागृत नहीं होता कि ईश्वर की भक्ति के लिए कहीं भटकने की आवश्यकता नहीं है। वह तो हमारे हृदय रूपी मंदिर में विराजमान है।

पुलिस प्रशासन आदि पर दोषारोपण करने के बजाय हम स्वयं का अवलोकन चिंतन कर लें तो यह नौबत ही न आये। ऐसी घटनाओं में वृद्ध, बच्चे व महिलायें ज्यादा घायल व परेशान होते हैं। सुरक्षा व व्यवस्था आदि को कोसने के बजाय हमें अपने अन्दर भी टटोलना चाहिए। पुजारियों को मोटी रकम भेट कर स्वर्ग पहुँचने की चाहत में दिव्यांग बन कर कष्टकारी जीवन बिताने से अच्छा है हम स्वयं में ईश्वर का साक्षात्कार ध्यान, योग व शुभ कर्मो के माध्यम से करें।

सर्वव्यापक, निराकार, ईश्वर की महानता तो उसकी रचना में झलकती हैं वही एक वाँका– सर्वशक्तिमान परमात्मा है जिसने हमें अन्न, जल, वायु, प्रकाश आदि निःशुल्क दे रखा है उसको धन्यवाद देने के बजाय किसी अन्य को खुश करें यह उचित नहीं। ईश्वर तो सिर्फ प्रेम –पिपासु है उसे श्रद्धा पूर्वक भक्ति भावों से ही तृप्त किया जा सकता है इन ढकोसलों से नहीं। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सत्य ही लिखा है–

हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत।

सदाधार पृथिवीम द्यामुतेमाम कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

अर्थात हे मनुष्यों! जो सृष्टि के पूर्व सब सूर्यादि तेजवाले लोकों का उत्पत्ति स्थान, आधार और जो कुछ उत्पन्न हुआ था, है और होगा उसका स्वामी था, है और होगा। वह पृथ्वी से लेकर सूर्य लोक तक सृष्टि को बना कर धारण कर रहा है। उस सुख स्वरूप परमात्मा ही की भक्ति जैसे हम करें वैसे तुम लोग भी करो।

– कार्यकारी सम्पादक

गतांक से आगे ....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ तृतीय समुल्लासारम्भः

अथाऽध्ययनाऽध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः

पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विँशति वर्षाणि तत्प्रातः सवनं चतुर्विंश–त्यक्षरा गायत्री गायत्रं प्रातःसवनं तदस्य वसवोऽन्वायत्ताः प्राणा वाव वसव एते हीदँ सर्वं वासयन्ति।।१।।

तञ्चेदेतस्मिन वयसि किञ्चिदुपतपेत्स ब्रूयात्प्राणा वसव इदं में प्रातः सवनं माध्यन्दिनँ सवनमनुसन्तनुतेति माहं प्राणानां वसूनां मध्ये यज्ञो विलोप्सी–येत्युद्धैव तत एत्यगदो ह भवित।।२।।

अथ यानि चतुश्चत्वारिँशद्वर्षाणि तन्माध्यन्दिनँसवनं चतुश्चत्वा–रिंशदक्षरा त्रिष्टुप् त्रैष्टुभं माध्यन्दिनँसवनं तदस्य रुद्रा अन्वायत्ताः प्राणा वाव रुद्रा एते हीदँसर्वं रोदयन्ति।।३।।

तं चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपेत्स ब्रूयात्प्राण रुद्रा इदं में माध्यन्दिनँसवनं तृतीयसवनमनुसन्तनुतेति माहं प्राणानाथं रुद्राणां मध्ये यज्ञो विलोप्सीयेत्युद्धैव तत एत्यगदो ह भवित।।४।।

अथ यान्यष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि तत्तृतीयसवनमष्टाचत्वारिशदक्षरा जगती जागतं तृतीयसवनं तदस्यादित्या अन्वायत्ताः प्राणा वावादित्या एते हीदँसर्वमाददते।।५।।

तं चेदेतस्मिन् वयसि किञ्चिदुपतपेत्स ब्रूयात् प्राणा आदित्या इदं मे तृतीयसवनमायुरनुसन्तनुतेति माहं प्राणानामादित्यानां मध्ये यज्ञो विलोप्सीयेत्युद्धैव तत एत्यगदो हैव भवित।।६।। – छान्दोग्योपनिषत् का वचन है।

ब्रह्मचर्य तीन प्रकार का होता है कनिष्ठ– जो पुरुष अन्नरसमय देह और पुरि अर्थात् देह में शयन करने वाला जीवात्मा, यज्ञ अर्थात् अतीव शुभगुणों से संगत और सत्कर्त्तव्य है इस को अवश्य है कि २४ वर्ष पर्यन्त जितेन्द्रिय अर्थात् ब्रह्मचारी रह कर वेदादि विद्या और सुशिक्षा का ग्रहण करे और विवाह करके भी लम्पटता न करें तो उसके शरीर में प्राण बलवान् होकर सब शुभगुणों के वास कराने वाले होते हैं।।१।। इस प्रथम वय में जो उस को विद्याभ्यास में सन्तप्त करे और वह आचार्य वैसा ही उपदेश किया करे और ब्रह्मचारी ऐसा निश्चय रक्खें कि जो मैं प्रथम अवस्था में ठीक–ठीक ब्रह्मचर्य से रहूंगा तो मेरा शरीर और आत्मा आरोग्य बलवान् होके शुभगुणों को बसाने वाले मेरे प्राण होंगे। हे मनुष्यों तुम इस प्रकार से सुखों का विस्तार करों, जो मैं ब्रह्मचर्य का लोप न करूं। २४ वर्ष के पश्चात् गृहाश्रम करूंगा तो प्रसिद्ध है कि रोगरहित रहूँगा और आयु भी मेरी ७० वा ८० वर्ष होगी।।२।।

मध्यम ब्रह्मचर्य– यह है जो मनुष्य ४४ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रह कर वेदाभ्यास करता है उसके प्राण, इन्द्रियां, अन्तःकरण और आत्मा बलयुक्त होके सब दुष्टों को रुलाने और श्रेष्ठों का पालन करने हारे होते हैं।।३।। जो मैं इसी प्रथम वय में जैसा आप कहते हैं कुछ तपश्चर्या करूं तो मेरे ये रुद्ररूप प्राणयुक्त यह मध्यम ब्रह्मचर्य सिद्ध होगा। हे ब्रह्मचारी लोगों! तुम इस ब्रह्मचर्य को बढ़ाओं। जैसे मैं इस ब्रह्मचर्य का लोप न करके यज्ञस्वरूप होता हूँ और उसी आचार्यकुल से आता और रोगरहित होता हूँ जैसा कि यह ब्रह्मचारी अच्छा काम करता है वैसा तुम किया करो।।४।।

उत्तम ब्रह्मचर्य – ४८ वर्ष पर्यन्त का तीसरे प्रकार का होता है। जैसे ४८ अक्षर की जगती वैसे जो ४८ वर्ष पर्यन्त यथावत् ब्रह्मचर्य करता है उसके प्राण अनुकूल होकर सकल विद्याओं का ग्रहण करते हैं।।५।। आचार्य और माता पिता अपने सन्तानों को प्रथम वय में विद्या और गुणग्रहण के लिए तपस्वी कर और उसी का उपदेश करें और वे सन्तान आप ही अखडित ब्रह्मचर्य सेवन से तीसरे उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन करके पूर्ण अर्थात् चार सौ वर्ष पर्यन्त आयु को बढ़ावें वैसे तुम भी बढ़ओं। क्योंकि जो मनुष्य इस ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर लोप नहीं करते वे सब प्रकार के रोगों से रहित होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होते हैं।।६।।

चतस्रोऽवस्थाः शरीरस्य वृद्धिर्यौवनं सम्पूर्णता किञ्चित्परिहाणिश्चेति। आषोडशाद् वृद्धिः। आपञ्चविंशतेर्यौवनम्। आचत्वारिंशतः सम्पूर्णता। ततः किञ्चित्परिहाणिश्चेति।

पञ्चविंशे ततो वर्षे पुमान् नारी तु षोडशे।

समत्वागतवीर्यौ तौ जानीयात्कुशलो भिषक्।। यह सुश्रुत के शरीर स्थान का वचन है।

इस शरीर की चार अवस्था है। एक (वृद्धि) जो १६वें वर्ष से लेके २५वें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की बढ़ती होती है। दूसरा (यौवन) जो २५ वें वर्ष के अन्त और २६वें वर्ष के आदि में युवास्था का आरम्भ होता है। तीसरी (सम्पूर्णता) जो पच्चीसवें से लेके चालीसवें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की पुष्टि होती है। चौथी (किञ्चित्परिहाणि) तब सब साङ्गोपाङ्ग शरीरस्थ सकल धातु पुष्ट होके पूर्णता को प्राप्त होते हैं। तदनन्तर जो धातु बढ़ता है वह शरीर में नहीं रहता, किन्तु स्वप्न, प्रस्वेदादि द्वारा बाहर निकल जाता है वही ४० वां वर्ष उत्तम समय विवाह का है अर्थात् उत्तमोत्तम तो अड़तालीसवें वर्ष में विवाह करना।

क्रमशः अगले अंक में ....

www.thearyasamaj.org

धरोहर.....

प्रदूषण

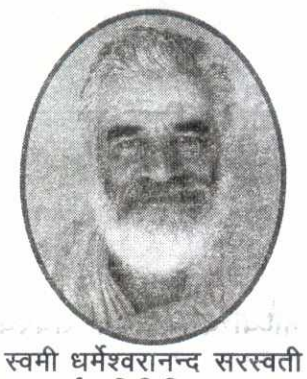

स्वमी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मन्त्री– आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

प्रदूषण समस्या आज विश्व की समस्या बन रही है। दूषण शब्द दुष् दूषये धातु के बनता है इसमें प्र उपसर्ग से उसकी विशेषता घोषित होती है। यह भी कई प्रकार का होता है १. वायु प्रदूषण, २. जल प्रदूषण, ३. शब्द प्रदूषण ४. मन प्रदूषण, ५. वाक् प्रदूषण आदि। प्रत्येक प्रदूषण व्यक्ति एवं समाज को कमजोर करते हैं और हमारे देश की सभ्यता तथा संस्कृति को विकृत करते हैं अतः प्रत्येक प्रदूषण से बचकर उसके समाधान का प्रयास करना प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है।

1. वायु प्रदूषण – जिस वायु के द्वारा हम सभी को स्वास लेना भी कठिन होता है तरह–तरह की बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं जहाँ तक कैंसर की बीमारी अस्थामा की बीमारी तथा टी०बी० की बीमारी इसी प्रदूषण से होती है आँखों की जलन हृदय का फूलना हार्ट अटैक होना इसका ही दुष्परिणाम है। जितनी आधुनिकता बढ़ रही है उतना ही विनाश हो रहा है जैसे चीनी मिल–कारखाने–भट्टे तरह–तरह की फैक्ट्रियाँ जो जहरीला धुआँ छोड़ रही है वह कार्बन हमारे लिए घातक है।

2. जल प्रदूषण – जिस पानी से हमारा जीवन चलता है कहते हैं जल ही जीवन है वह जल भी प्रदूषित हो चुका है दुग्धडेरी –फैक्ट्री तथा मिलों से उत्सर्जन होकर रासायनिक जल नदी और नालों के रूप में जिधर निकल जाता है उधर का ही जल स्वाभाविक रूप से प्रदूषित हो जाता है नल–ट्यूबैल द्वारा हम उसे और खेती को पिलाते है उसका परिणाम हैप्पी टाइप्स–पीलिया जैसी बीमारियाँ पैदा हो रही हैं ऐसा नदी–नालों के निकटस्थ ग्रामों के लोगों के मरने की सूचनायें आती रहती है जो समाज के लिए एक चिन्ता का विषय बन गया है बूचड़ खाने वाले तो बोरिंग करके समस्त पदूषण नीचे भेज रहे हैं जो १०० फिट तक के जल को प्रदूषित कर रहा है ग्रामों में सरकार द्वारा अनुदानित सुलभ शौचालयों का निर्माण पैसे बचाने के लिए मिट्टी द्वारा ही ढककर पूर्ति कर देते हैं इससे सारे मल का प्रदूषण जल को प्रदूषित करता है। इस प्रकार के अनेक संसाधन है जो विश्वासमय से लिखना उचित नहीं है।

3. शब्द प्रदूषण – वेद कहता है भद्रं कार्णेभिः श्रणुयाम देवाः हम कानों से अच्छे शब्द सुने कल्याणकारी शब्द सुने लेकिन आज की संस्कृति में डी०जे० संस्कृति प्रभावी हो गई जो गन्दे गाने आबाल वृद्ध के कानों के लिए समस्या है इससे ही मन विकृत होता है इसी से वाणी का दुरूपयोग होता है अतः जो हमारे विचारों की पवित्रता नष्ट करें वह हमारी राक्षसी वृत्ति को बढ़ाये तो देवत्व सुरक्षित कैसे रह सकती है।

4. मन प्रदूषण – "तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु" वह मेरा मन शिव संकल्पों वाला होवे। मन शुद्ध आहार से पवित्र होता है आहार भी विगड़ गया है मन से वाणी और वाणी से कर्म से आचरण स्वभाव पर प्रभाव पड़ता है।

5. वाक् प्रदूषण – वाक् अर्थात् वाणी का प्रदूषण भी इसी से जुड़ा है वाणी की शुद्धता एवं उच्चारण दोष कठोरभाषा अथवा मधुर भाषा व्यक्तित्व की पहिचान होती है कौआ और कोयल एक ही रूप के होते हुए भी बोलने से पहचान होती है और उसी के अनुसार उन्हें सम्मान मिलता है।

समस्या का समाधान – यह समस्या विश्व स्तर पर है इसके विषय में श्री नरेन्द्र मोदी जी भी अभी कुछ दिन पूर्व विदेश गए थे जो इस समस्या पर विश्व के राष्ट्राध्यक्षों ने चिन्ता प्रकट की है वृक्षारोपण एक उपाय है प्राचीन परम्परा यज्ञ करना दूसरा उपाय है वेद मन्त्रों का पाठ तृतीय उपाय है मन्त्र जप करना और शुद्ध आहार करना स्वाध्याय–साधना–सेवा –परोपकार से व्यक्ति देवता बनता है ऋषि महर्षि प्राचीन समय में यज्ञ किया करते थे वायु–जल–वाक्–मन–शब्द सभी प्रदूषण समाप्त होगें और पूरे विश्व में सुख–शान्ति स्वास्थ्य की स्थापना होगी ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास हैं।

आर्य समाज और महर्षि जी के सम्बन्ध में कुछ प्रशनों के उत्तर

– खुशहाल चन्द्र आर्य

प्रश्न – आर्य शब्द का अर्थ क्या है?

उत्तर – आर्य शब्द का अर्थ धर्मात्मा, सज्जन, हमेशा धर्म और न्याय के रास्ते पर चलने वाला और कर्त्तव्य का पालन करने वाला, शान्तचित और उदार चरित्र वाला मनुष्य होता है।

प्रश्न – इस विषय में कोई प्रमाण दीजिए?

उत्तर– वशिष्ठ–स्मृति का निम्न श्लोक इस विषय को प्रतिपादित करता है–

कर्त्तव्यमाचरम् कार्यम्, अथर्वव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे स तु आर्य इति स्मृतः।।

अर्थात – जो करने योग्य कामों को हमेशा करता रहे और बुरे कामों को कभी न करे, ऐसे सदाचारी मनुष्य को आर्य कहते है। "शब्द कल्पद्रुम, वाचस्पत्य वृहदभिद्य" आदि संस्कृत के प्रसिद्ध कोषों में आर्य शब्द के अर्थ पूज्य, श्रेष्ठ, मान्यः, उदार चरित्र, शान्तचित्त, न्याय–पथावलम्बी, सततकर्त्तव्य कर्मानुष्ठाता, धर्मिकः, धर्मशली, इत्यादि दिए हैं।

प्रश्न – समाज शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर – समाज शब्द का अर्थ समूह से है, जो सम्–आ+अज अर्थात जो मिलकर चारों ओर से प्रगतिशील हो और बुराईयों को दूर करने का प्रयत्न करे। आर्यों के समूह को आर्यसमाज के नाम से पुकारा जाता है, जो मिलकर सद्गुणों के प्रचार और दुर्गुणों तथा कुरीतियों के निवारण का सदा प्रयत्न करे।

प्रश्न – आर्य समाज की स्थापना किसने की और कब की ?

उत्तर – आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सबसे प्रथम ७ अप्रैल १८७५ में बम्बई नगर में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ और लोक उपकारार्थ की।

प्रश्न – आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म कब और कहां हुआ था।

उत्तर– महर्षि दयानन्द का जन्म गुजरात प्रान्त के टंकारा गाँव में सन् १८२४ में हुआ।

प्रश्न – उनका पहला नाम क्या था?

उत्तर– उनका पहला नाम मूल शंकर व दयाराम था पर बोलचाल में मूलशंकर ही कहा जाता था।

प्रश्न– मूलशंकर के माता–पिता का क्या नाम था?

उत्तर – मूलशंकर के पिता का नाम कर्शन जी तिवारी तथा माता का नाम अमृतबेन था।

प्रश्न– कर्शन जी क्या काम करते थे?

उत्तर– कर्शन जी एक बड़े जमीदार और बैंकर तथा मौरवी राज्य के एक अधिकारी थे।

प्रश्न– मूलशंकर के दिल में ज्ञान का उदय कब हुआ और मूर्ति पूजा से चित्त कब हटा?

उत्तर – जब बालक मूलशंकर लगभग १४ साल के थे तब शिव–रात्रि को उनके पिता जो कट्टर शिव भक्त थे, उन्हें मन्दिर में लाये। मूल जी ने शिव रात्रि को रात भर जागने और उपदास रखने का माहात्म्य सुना हुआ था। इसलिए सबके (यहाँ तक कि अपने पिता के) सो जाने पर भी आंखों पर पानी के छीटे डालकर वे जागते रहे। इतने में उन्होंने देखा कि एक चूहा महादेव जी की मूर्ति पर चढ़ा हुआ मिठाई को खा रहा था, फिर भी महादेव जी कुछ भी नहीं कर रहे थे। बालक ने पवित्र, सरल हृदय में शंका उठी कि यह क्या बात है। जिस महादेव जी के बारे में पुराणों में कथाएं, त्रिपुरारी राक्षसों को त्रिशूल से मारने की बताई गयी है, वे क्या एक छोटे से चूहे से भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता? बालक को जब इसका कोई जबाब नहीं सूझा तो उसने अपने पिता जी को जगाकर, अपना संदेह उनके सामने रख दिया। उनसे भी इस प्रश्न का कुछ उत्तर न बना और वे मूलशंकर को धमकाने लगे कि तू ऐसी शंकाएं क्यों करता है? पिता जी के उत्तर से बालक के दिल को जरा भी सन्तोष न हुआ और छोटी–सी आयु में ही उसने मन में यह निश्चय कर लिया कि जब तक वह सच्चे महादेव (परमेश्वर) का पता न लगा लेगा। तब तक आराम न करेगा। उसी दिन से सरल हृदय बालक का चित्त मूर्ति–पूजा से हट गया।

शेष पृष्ट -७ पर

www.thearyasamaj.org

हिन्दी के प्रचुर प्रयोग व उचित प्रयोग में निहित है हिन्दी का राष्ट्रभाषा पद

– सीताराम गुप्ता

संवैधानिक दृष्टि से हिन्दी भाषा आज हमारे देश की राजभाषा तो है लेकिन राष्ट्रभाषा नहीं। हम हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाए जाने की मांग को लेकर काफी उत्साहित रहते हैं। अच्छी बात है लेकिन क्या सरकारी तौर पर हिन्दी को राष्ट्र भाषा मान लेने मात्र से हिन्दी का उन्नयन अथवा उद्धार हो जाएगा? वास्तव में इसके लिए हमें किसी का मोहताज होने की जरूरत नहीं है। यदि हम सब हिन्दी में लिखें, हिन्दी में कामकाज करें व हिन्दी में प्रायः की जाने वाली भाषा व व्याकरण की अशुद्धियों को पहचानकर उन्हें दूर करने के लिए समस्या ये है कि हिन्दी के उन्नयन अथवा विकास के संदर्भ में हमारी कथनी व करनी में दिन–रात का अन्तर है। हम हिन्दी की बात ज्यादा करते हैं हिन्दी में अथवा हिन्दी के बारे में सही बात कम करते हैं।

कई महानुभाव हिन्दी की किसी बोली को स्वतंत्र भाषा के रूप में संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करवाने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगाए हुए हैं और कई सिरफिरे तो यहां तक कहते फिरते हैं कि हिन्दी को बचाना है तो इसे देवनागरी लिपि की बजाय रोमन लिपि में लिखना प्रारम्भ कर देना चाहिए। ये कुतर्क व निरर्थक प्रयास हिन्दी को कमजोर करने के लिए पर्याप्त है। कहीं हिन्दी के विरोध में आवाजें उठने लगती हैं तो कहीं हिन्दी की बोलियों–उपबोलियां हैं वो हिन्दी की ही पूंजी हैं। उनका विरोध नहीं अपितु मानक भाषा के साथ–साथ उनका विकास भी अनिवार्य है। हिन्दी की बोलियों व उपबोलियों का विकास हिन्दी का ही विकास है। कई बार हम हिन्दी के पक्षधर होने का प्रमाण देने के लिए अंग्रेजी का विरोध करने की नीति भी अपनाते हैं, बिल्कुल उसी तरह जैसे दक्षिण भारत के कुछ लोग हिन्दी का विरोध करने के लिए करते हैं। शायद उसी विरोध का परिणाम है कि दक्षिण भारतीय भाषाएं देश के दक्षिणी कोने में सिमटकर रह गई हैं।

हिन्दी के राष्ट्रभाषा पद पर आसीन होने में हम हिन्दी वाले ही सबसे बड़ी बाधा बनकर खड़े होते हैं जब हम हिन्दी के विषय में बातें तो बड़ी–बड़ी करते हैं लेकिन इसे व्यवहार में कम लाते हैं अथवा इसका गलत इस्तेमाल करते हैं और गलतियों को ठीक करने का प्रयास बिल्कुल नहीं करते। कुछ लोग बड़े गर्व से कहते हैं कि दुनिया की सभी भाषाएं संस्कृत से निकली हैं और देवनागरी ही एक ऐसी लिपि है जो पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि है जो सत्य से कोसों दूर है। कुछ महाशय देवनागरी के आक्षरिक लिपि होने को ही एक बड़ी उपलब्धि मानते हैं और इसके लिए इसकी प्रशंसा में उनके गाए गीतों की श्रृंखला कभी विश्रृंखलित नहीं होती। सिर्फ संस्कृत व हिन्दी भाषा की शान में कसीदे पढ़ने से हिन्दी का उत्थान संभव नहीं। जहाँ तक समय, श्रम व संसाधनों को लगाने की बात है हिन्दी के लिए हमारे पास न तो समय ही है और न इसके लिए परिश्रम करने को तैयार हैं। हिन्दी के उन्नयन व विकास के लिए व्यक्तिगत स्तर पर संसाधनों को लगाने अथवा पैसा खर्च करने की बात करना तो बेमानी ही होगा।

अंग्रेजी भाषा में दक्षता प्राप्त करने के लिए इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स करते हैं अच्छी बात है लेकिन हिन्दी के लिए थोड़ा सा भी अतिरिक्त प्रयास क्यों नहीं करते? अंग्रेजी भाषा में न केवल सही स्पैलिंग लिखने के लिए पूरा प्रयास करते हैं अपितु सही उच्चारण के साथ बोलने के अभ्यास में भी कोई कसर नहीं रख छोड़ते। फिर हिन्दी के प्रति ऐसी उपेक्षा व दोगलापन क्यों? क्या इसीलिए कि ये मातृभाषा के रूप में हमें विरासत में बिना किसी प्रयास के प्राप्त हो गई है? ऐसी स्थिति में मात्र इसे राष्ट्र भाषा का दर्जा दे देने से इसका विकास व राष्ट्र भाषा के पद पर इसकी प्रतिष्ठा बने रहने में संदेह है। हिन्दी के लिए समय और श्रम ही नहीं इसमें इंवेस्टमेंट करने की भी जरूरत है।

एक बार एक संस्कृताचार्य से मिलने जाना हुआ। हिन्दी व संस्कृत के मूर्द्धन्य विद्वान होने के साथ–साथ कई वेदों के अच्छे ज्ञाता व वक्ता भी हैं। उनके पुत्र औषधि विक्रेता हैं जिनकी एक कैमिस्ट शॉप है। उनकी दुकान पर मुख्य बोर्ड के सामने एक छोटे बोर्ड पर रेड क्रॉस का चिन्ह बना था और लिखा था दवाईयाँ है। मैंने जब संस्कृताचार्य महोदय का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया तो उन्होंने कहा, ''लोगों को क्या फर्क पड़ता है इससे?'' ''लेकिन इसका भाषा के विकास पर तो गलत असर पड़ता है न'', मैंने प्रतिवाद किया। ''कौन ध्यान देता है इन छोटी–मोटी बातों पर?'' वो पूरी तरह से डिफेंसिव थे। वो इस विषय पर बात करने को ही तैयार नहीं थे। क्या हिन्दी भाषा को सही–सही लिखने के लिए ज्यादा मेहनत लगती है या कुछ ज्यादा खर्च करना पड़ता है?

भाषा के विकास पर इन छोटी–छोटी अशुद्धियों का बहुत गलत असर पड़ता है। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक जब सभी किसी गलत लिखे शब्द को बार–बार और हर जगह देखते हैं तो उन्हें यही सही लगने लगता है। हम लिखने में स्वयं भी उसी का प्रयोग करने लग जाते हैं। यदि आप सर्वेक्षण करें तो पायेगे कि दवाविक्रेताओं की दुकान पर दवाइयां शब्द प्रायः गलत लिखा मिलेगा। मैंने तो आज तक एक भी ऐसी कैमिस्ट शॉप नहीं देखी जिस पर दवाइयों शब्द ठीक लिखा हो। क्या ये बहुत कठिन शब्द है? बिल्कुल नहीं।

एक साधारण सा निमय है कि जिस एकवचन ईकारांत शब्द के अंत में दीर्ध ई लगती है (बड़ी ई की मात्रा लगती है) बहुवचन में वह ह्रस्व हो जाती है अर्थात् उसमें छोटी ई की मात्रा लगती है जैसे नदी–नदियाँ, रोटी–रोटियाँ आदि। हर कॉलोनी व हर मार्किट में एक कैमिस्ट शॉप जरूर होती है। व्यक्ति जब भी बीमार पड़ता है तो पास के कैमिस्ट या दवा विक्रेता से दवाइयां लेने जाता है। कई बार बच्चे भी जाते हैं। दूसरे लोग भी वहां से गुजरते हैं जो उस गलत लिखे हुए शब्द को बार–बार देखते हैं। जब हर जगह यही लिखा होता है तो बच्चे ही नहीं अन्य सभी लोग भी इसे ही सही मान बैठते हैं और स्वयं भी उसी तरह लिखने लग जाते हैं।

इसी श्रृंखला में एक शब्द श्रृंखला अथवा श्र से प्रारम्भ होने वाले कुछ अन्य शब्द हैं जो हम प्रायः श्रृ लिखते हैं जैसे श्रृंग, श्रृंगार, श्रृगाल आदि। श्रृ एक संयुक्त वर्ण है जो श एवं ऋ के मेल से बनता है। जब हम श एवं र को संयुक्त रूप में लिखते हैं तो उसका रूप श्र होता है जैसे श्रद्धा, श्राद्ध, श्राप, श्रावण, श्रीमान, श्रीमती श्रेणी, आदि। श में या तो ऋ जोड़कर संयुक्त वर्ण श्रृ बनाएंगे या श में र जोडकर श्र बनाएंगें। श में र एवं ऋ एक साथ कैसे जोड़ सकते हैं? अतः श्रृंग, श्रृंगार, श्रृगाल आदि सभी वर्तनियाँ अशुद्ध हैं। इनकी सही वर्तनियां शृंग, शृंगार, व शृगाल ही लिखनी होंगी।

एक शब्द है उज्ज्वल जिसे अधिकांश व्यक्ति उज्जवल लिखते हैं। क्योंकि अधिकांश ऐसे शब्दों में जहाँ दो ध्वनियां एक साथ आती हैं प्रायः पहली ध्वनि स्वररहित होती है और बाद वाली सस्वर जैसे लड्डू, गुड्डू, बच्चन, चप्पल, उद्देश्य, आदि। लेकिन उज्ज्वल में ऐसा नहीं है। इसमें दोनों ही ज न केवल स्वररहित हैं। अपितु साथ–साथ भी आते हैं। इसका यह रूप संधि के नियम के प्रभाव से बना है। उत् एवं ज्वल की जब संधि की गई तो उत् में जो त् की ध्वनि है वह ज्वल में ज् की ध्वनि के प्रभाव से ज् हो जाती है और संधि से नया शब्द बनता है उज्ज्वल। कुछ लोग उज्ज्वल तो ठीक लिखते हैं लेकिन जिस शब्द में भी ज्वल आता है उन सभी को भी ज्ज से लिखते हैं। जैसे प्रज्ज्वल। यहां प्र एवं ज्वल के मेल से नया शब्द प्रज्वल बनेगा न कि प्रज्ज्वल। प्रज्ज्वल अथवा प्रज्ज्वलित दोनों ही अशुद्ध हैं। सही शब्द हैं प्रज्वल व प्रज्वलित।

इसके अतिरिक्त अनेक सार्वजनिक स्थानों पर जहां काफी संख्या में लोग रोज

शेष पृष्ठ -७ पर

www.thearyasamaj.org

संसार में सबसे बड़ा परिवार ईश्वर का परिवार है

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हम परिवार शब्द का प्रयोग बहुधा करते हैं। पहले भारत में संयुक्त परिवार होते थे। एक परिवार में कई भाई, उनके परिवार अर्थात् पत्नी व बच्चे, बहने आदि होते थे। इन सबसे मिलकर एक संयुक्त परिवार बनता था। देश आजाद हुआ, लोग पढ़े लिखे और नौकरी आदि व्यवसाय करने लगें। कुछ की आर्थिक स्थिति अच्छी हुई तो उन्हें संयुक्त परिवार में कमियां दृष्टिगोचर होने लगी। पाश्चात्य मूल्यों में विद्यमान स्वच्छन्दता आदि अपमूल्यों ने भी संयुक्त परिवार की व्यवस्था को हानि पहुचाई। कई कारणों से यह संयुक्त परिवार विघटित होते गये और अब प्रायः एकल परिवार ही अधिकांशतः देखने को मिलते हैं। वर्तमान में एक परिवार में पति–पत्नी के अतिरिक्त उनके बच्चे ही होते हैं। यदि पुत्र व पुत्रवधु के संस्कार अच्छे हैं तो माता–पिता भी उनके साथ रह सकते हैं। जिन परिवारों में वृद्ध माता–पिताओं को रखा जाता है वहां कम व अधिक माता–पिता को बोझ ही माना जाता है। आजकल एक परिवार में एक, दो व अधिक हुआ तो तीन सन्ताने होती हैं। अतः परिवार की संख्या अधिकतम पांच होती है और यदि किसी परिवार में माता–पिता भी हैं, तो उनकी संख्या सात तक हो सकती है। औसत संख्या पर विचार करें तो सम्भवतः यह तीन या चार के बीच हो सकती है।

दूसरी ओर हम देखते हैं कि इस संसार को एक सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सच्चिदानन्द सत्ता ने जड़, कारण व मूल प्रकृति, जो सत, रज व तम गुणों वाली त्रिगुणात्मक प्रकृति कही जाती है, से बनाया है। इस ब्रह्माण्ड में अनन्त संख्या में एकदेशी, सूक्ष्म, अल्पज्ञ, ससीम, अनादि, अमर नित्य चेतन जीवात्मायें हैं जिन्हें ईश्वर उनके पूर्व जन्मों के संस्कार व उनके कर्मानुसार अभुक्त कर्मों के फलों का भोग करने के लिए जन्म देता है। वस्तुतः यह सृष्टि ईश्वर ने असंख्य जीवात्माओं को सुख प्रदान करना होता है। जो जीवात्मायें असत्, अज्ञान, अशुभ कर्म नहीं करती हैं, उन्हें किसी प्रकार का दुःख नहीं होता है। ब्रह्माण्ड की अनन्त जीवात्मायें ईश्वर की प्रजा अर्थात् सन्तानें हैं और इन सभी जीवात्माओं से मिलकर ही ईश्वर का परिवार बना हैं जिनका पालन व पोषण ईश्वर ने अपने बनायें नियमों व व्यवस्थाओं के अनुसार करता है। विचार करने पर ज्ञात होता है कि सभी जीवात्मायें वा प्राणी अपनी अपनी योनियों में सन्तुष्ट रहते हैं। मरना अपवादस्वरूप शायद ही कोई चाहता हो परन्तु जीवित रहना सभी चाहते हैं। मनुष्यादि सभी प्राणियों के जीवन में दुःख की बहुत कम स्थितियां आती हैं और वह सभी प्रायः मनुष्यों द्वारा ही अविद्या व अविवेक के कारण निर्मित होती हैं। यदि मनुष्य वेद ज्ञान को प्राप्त कर उसके अनुसार जीवन यापन करें तो अनुमान हैं कि मनुष्य को कम से कम दुःख होगें और उसका जीवन सुख व चैन से व्यतीत होगा। यह भी उल्लेख कर दें कि भौतिक साधन व सुख–सुविधायें सुख के कारण हो सकते हैं परन्तु इनसे स्थिर वा स्थाई सुख नहीं मिलता। सच्चा सुख तो सत्य ज्ञान वेद व उसके आचरण अर्थात धर्म का पालन करने से मिलता है।

ईश्वर का परिवार ब्रह्माण्ड में मनुष्यों के परिवारों में सबसे बड़ा परिवार है। मनुष्यों का कोई परिवार आकार व परिणाम में ईश्वर के परिवार की बराबरी नहीं कर सकता। वस्तु स्थिति यह है कि मनुष्यों के सभी परिवार भी ईश्वर के परिवार में ही सम्मिलित हैं। ईश्वर के सभी प्राणियों पर असंख्य व अनन्त उपकार हैं जिससे मनुष्य कभी उऋण नहीं हो सकते। सामान्यतः ईश्वर को अपने लिए इस सृष्टि की कोई आवश्यकता नहीं थी। वह तो आनन्द स्वरूप होने से प्रत्येक स्थिति में सुखी व आनन्दित रहता है। यह सृष्टि ईश्वर ने अपनी प्रजा जीवात्माओं के लिए बनाई है। वह हमारा माता, पिता, गुरू व आचार्य भी है और असली राजा व न्यायाधीश भी वही है। वह परमात्मा ही सूर्य को समय पर उदय व उसको अस्त करता है, ऋतु परिवर्तन करता है और कृषि द्वारा हमें नाना प्रकार के अन्न, फल–फूल, वनस्पतियों एवं गो आदि पशुओं से दुग्ध एवं दुग्ध से निर्मित होने वाले पदार्थों को प्रदान कराता है। ज्ञान मनुष्य की मौलिक आवश्यकता है। आचरण व कर्तव्य–कर्मों का ज्ञान भी मनुष्यों को आदि काल में उसी से ऋषियों की आत्माओं में उपदेश द्वारा प्राप्त हुआ है। ईश्वरीय ज्ञान वेद की प्राप्ति व उपलब्धि एवं उसका आचरण ही सर्वोत्तम सुख, इहलौकिक व पारलौकिक अर्थात् मोक्ष का सुख, प्राप्ति का साधन है जिसे ईश्वर ने हमें प्रदान किया हुआ है। हम ईश्वर की व्यवस्था से एक शिशु के रूप में संसार में आते हैं, बढ़ते हैं, बालक व किशोर, उसके बाद युवा, प्रौढ़ और अन्त में वृद्ध हो जाते हैं। वृद्धावस्था में आकर हमारे शरीर की शक्तियों का ह्रास होता रहता है और किसी दिन अचानक या किसी रोग से, वस्त्र परिवर्तन की भांति, मृत्यु हो जाती है और फिर कर्मानुसार ईश्वर हमें फिर से नया जन्म प्रदान करता है।

यह तो हमने जान लिया है कि हम ईश्वर के परिवार के अंग है और ईश्वर का परिवार ही हमारा वास्तविक परिवार है जो मनुष्य व पशु परिवारों की तुलना में सबसे बड़ा है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह प्रत्येक दिन ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य पर विचार करे, स्वाध्याय करे, मित्रों व विद्वानों से चर्चा करे और आप्त पुरुषों का सत्संग करे। मनुष्यों की सहायता के लिए कर्तव्यों का विधान भी ईश्वर ने सृष्टि की आदि में प्रदत्त वेदों के ज्ञान द्वारा किया हुआ है। हमें केवल माता–पिता व आचार्यों से शिक्षा प्राप्त करनी है तथा गुरूओं व आचार्यों से संसार व इसके रहस्यों को जानना है। कृषि व वाणिज्य आदि कार्य करने हैं तथा इनसे इतर ईश्वर के प्रति हमें कृतज्ञ भाव रखते हुए उसकी वेद विधान 'कस्मै देवाय हविषा विधेम और भूयिष्ठान्ते नमः उक्तिं विधेम' आदि द्वारा स्तुति, प्रार्थना, उपासना, अग्निहोत्र यज्ञ द्वारा हवि प्रदान करने सहित उसकी भक्ति करनी है। हमारे द्वारा भक्ति आदि इन सब कार्यों को करने से भी ईश्वर को कोई लाभ नहीं होता अपितु इसका लाभ भी हमें ही होता है। स्तुति से ईश्वर में प्रीति होती है और हम दुर्गुणों को त्याग कर ईश्वर के गुणों के अनुसार स्वयं को बनाने का प्रयत्न करते है। प्रार्थना में हम ईश्वर से ईश्वर व अन्य आवश्यक पदार्थों व सुख आदि को मांगते हैं। उपासना में ईश्वर से स्वयं को जोड़ते वा युक्त करते हैं जिससे संगति के गुण हमारी आत्मा में प्रविष्ट होते हैं जिससे हमारा ज्ञान व सामर्थ्य में वृद्धि होती है। उपासना से ही ईश्वर का साक्षात्कार भी होता है जो कि मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य है। हवन वा अग्निहोत्र करने से भी हमें शुद्ध प्राण वायु मिलती है जिससे हम स्वस्थ व निरोग रहते हैं और हमारा योग–क्षेम होता है। भक्ति से भी हमें परोपकार आदि की प्रेरणा मिलती है और हमारा मन सुख, शान्ति व प्रसन्नता से भर जाता है। अतः ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करना और प्रातः सायं वेद मंत्रों से उसकी स्तुति, प्रार्थना, उपासना, संध्या व उसे हवि प्रदान करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है।

इस संक्षिप्त लेख में हमने यह जाना कि ईश्वर का परिवार मनुष्य परिवारों में सबसे बड़ा है। सभी जीवात्मायें व प्राणी ईश्वर के परिवार के अंग व सदस्यों के समान है। ईश्वर हमारा माता, पिता, गुरू, आचार्य, राजा, न्यायाधीश, और अग्रणीय नेता आदि है। इसके साथ ही हम इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म शम्।

मो० : ०९४१२६८५१२१

पृष्ठ -१ का शेष

निर्भीक राष्ट्रवादी .....

अपनी छाती खोल कर कहा था कि "हिम्मत है तो चलाओ गोली। ऐसे थे वह निर्भीक, तेजस्वी, निराले सन्यासी।

भारतीय गुरूकुल प्रणाली को पुनः भारतीय जनमानस में लाने वाले तथा लाखों हिन्दुओं को जो विधर्मी बन चुके थे हिन्दू धर्म में वापस लाकर उन्हें बराबर का मान–सम्मान दिया। ऐसे राष्ट्रवादी निर्भीक संन्यासी को शत बार नमन है। जो हम सब के प्रेरणा स्रोत हैं।

कार्यवाहक प्रधान डा० धीरज सिंह ने आगे कहा कि आज प्रदेश का युवा रास्ता भटक गया है वह नशे आदि की आदतों के कारण अपराधी बनता जा रहा है। आर्य समाज सदैव से ही सामाजिक बुराईयों का प्रबल विरोधी रहा है इसी कारण ०८ सितम्बर, २०१६ को उ०प्र० के मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन पूर्ण शराब बन्दी हेतु दिया गया था परन्तु उस पर कोई कार्यवाही न करके पुनः हम आर्य भाईयों को आंदोलन करने के लिए मजबूर कर दिया है। शीघ्र ही इस सम्बन्ध में कोई निर्णय लेकर आन्दोलन की रूप रेखा तय की जायेगी।

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ -१ का शेष

ऋग्वेद के आइने .....

निम्न कोटि का होगा या विज्ञान के विरूद्ध होगा तो हमें यह मान लेने में कोई आपत्ति न होगी कि तत्कालीन समाज अविकसित अवस्था में था। लेकिन यदि उसमें वर्तमान ज्ञान का स्तर उच्च कोटि का और आधुनिक विज्ञान से समर्थित होगा, तो पूर्वाग्रह को छोड़कर इतिहासकारों को मान लेना चाहिए कि ऋग्वैदिक भारतीय समाज अविकसित अवस्था में न होकर उच्चकोटि का जीवन व्यतीत करते थे आधुनिक जीवन से उनका जीवन किसी भी स्थिति में निम्न स्तर का नहीं था सिर्फ मौखिक विवेचन से नहीं, बल्कि ऋग्वेद के उदाहरणों से देखें कि ऋग्वैदिक भारतीय समाज के बारे में सच्चाई क्या है?

१. गृह–निर्माण : जो इतिहासकार यह कहते हैं कि ऋग्वैदिक समाज कबीलाई अवस्था में था और उसको गृह–निर्माण की जानकारी नहीं थी, उसको गलत साबित करने के लिए निम्नलिखित दो मंत्र पर्याप्त हैं– (क)

राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे।
सहहस्त्रस्थूणे आसाते।। ऋ. (२/४१/५)

अर्थात– हे द्रोहकर्मरहित जनो! तुम उन लोगों को जानो जो निश्चल, श्रेष्ठ हजार खम्भों से बने हुए सभा–भवन में बैठते हैं।

(ख) शतमश्मन्मयीनाम् पुरामिन्द्रो व्यास्यत्।
दिवोदासाय दाशुषे।। ऋ. (४/३०/२०)

अर्थात– जो राजा पत्थर से निर्मित सैकड़ों नगरों को विशेष प्रकार से काटे, वही विजयी हो सकता है।

जब हजार खम्भों पर आधारित और पत्थर से निर्मित भवन का स्पष्ट वर्णन ऋग्वेद में वर्तमान है तो इतिहासकारों की यह धारणा स्वतः ही निर्मूल हो जाती है कि तत्कालीन समाज को गृह–निर्माण का ज्ञान नहीं था। अपितु ऋग्वैदिक आर्यों को गृह–निर्माण का सम्यक् ज्ञान था।

२. विवाह–प्रथा : कुछ इतिहासकार यह भी गलत धारणा पाल रखे हैं कि प्रारम्भिक आर्यों में विवाह–प्रथा का प्रचलन नहीं था, लेकिन स्त्री पुरुष के शारीरिक सम्बन्ध से जनसंख्या की वृद्धि होती रही। इतिहासकारों की यह धारणा भी निम्नलिखित मंत्र से खण्डित होती है–

वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य इ वहाते महिषीमिषिराम्।
ऋ. (५/३७/३)

अर्थात् जो पुरुष पति की कामना करने वली वधू से विवाह करता है, वह उसे अपनी रानी बनाता है।

इसके अतिरिक्त ऋग्वेद प्रथम मण्डल के १२५ वां एवं १७६ वां सूक्त का देवता अर्थात् वर्णनीय विषय ही 'दम्पति' है, जिसका शाब्दिक अर्थ विवाहित पति–पत्नी होता है। इन दोनों सूक्तों में विस्तार पूर्वक विवाह से सम्बद्ध वर्णन है। इसके लिए ऋग्वेद (१०.२७.१२), (१०.३२.३) तथा (१०.८५.३६) भी द्रष्टव्य हैं। अतः स्पष्ट है कि ऋग्वैदिक समाज में विधिपूर्वक विवाह की प्रथा प्रचलित थी।

३. कृषि–कार्य : कुछ इतिहासकारों का मत है कि ऋग्वैदिक समाज कृषि–कार्य से अनभिज्ञ था और इसकी पुष्टि में तर्क देते हैं कि ऋग्वेद में अन्न शब्द नहीं पाया जाता है। लेकिन उनकी दृष्टि ऋग्वेद (६/६७/८) पर नहीं पड़ती है जहाँ घी और अन्न दोनों शब्द स्पष्टतः पड़े हुए हैं और अन्यत्र 'नमसा' या 'नम' शब्द के धात्वर्थ से भी अन्न शब्द का ग्रहण होता है। अन्न के लिए सिंचाई की जरूरत होती है। सिंचाई के लिए ऋग्वेद का निम्नांकित मंत्र ध्यातव्य है–

सिञ्चति नमसावतमुच्चा चक्रं परिज्मानम्।
नीचीवारमक्षितम्।। ऋ. (८/७२/१०)

अर्थात जिसके ऊपर चक्र लगा हो और चारों ओर भूमि हो तथा नीचे पानी के द्वार हों, ऐसे अक्षय भण्डार रूप कूप को अन्न के लिए सिंचाई के काम में लाते हैं'। इसी तरह का वर्णन ऋग्वेद १०/३४/१३ में कृषि करने का आदेश है। जब ऋग्वेद में इस तरह की सिंचाई के वैज्ञानिक साधन एवं कृषि–कार्य का स्पष्ट उल्लेख है तब इतिहासकारों की इस धारणा को सत्य नहीं माना जा सकता है कि ऋग्वैदिक समाज को कृषि–का ज्ञान नहीं था।

४. समाज का वर्गीकरण : कुछ इतिहासकार ऋग्वैदिक समाज को कबीलाई अवस्था को मानकर यह कहते हैं कि वैसी स्थिति में समाज का वर्गीकरण सम्भव नहीं था। लेकिन ऋग्वेद १०/६०/१२ में समाज के वर्गीकरण अथवा वर्ण–व्यवस्था का स्पष्ट वर्णन है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखामासीत् बाहु राजन्यः कृतः।
उरु तदस्य यत् वैश्यं पदाभ्याम् शूद्रो अजायत।।

अतः ऋग्वैदिक समाज के वर्गीकृत न होने की मान्यता भी गलत साबित होती है। उपरोक्त मंत्र से यह साबित हो जाता है कि ऋग्वैदिक समाज सुन्दर एवं सम्यक् रूपेण चार वर्णों में वर्गीकृत था।

५. राजनीति : ऋग्वेद ३/३८/६ में कहा गया है–

त्रीणि राजाना विदथे पुरुणी परि विश्वानि भूषथः सदांसि।
अपश्यमा मनसा जगन्वान् व्रते गंधर्वा अपि वायुकेशान।।

अर्थात् प्रजा के हित में विविध प्रकार के सम्पूर्ण सुखों की व्याख्या एवं व्यवस्था करने के लिए तीन सभा की स्थापना करें, जिसमें व्रतपालक, राजनीति के ज्ञाता, विज्ञानवान् और सूर्य के समान अपने ज्ञान से प्रकाशित जन हों। यदि आज के संदर्भ में इसकी तुलना करें तो लोक सभा, राज्य सभा एवं न्याय सभा के रूप में समझा जा सकता है। ऋग्वेद के अन्य सूक्तों एवं मंत्रों में भी इस तरह के राजनीति एवं प्रशासन व्यवस्था का वर्णन मिलता है। इस प्रकार तीन सभाओं द्वारा शासित समाज को पशुचारक या कबीलाई अवस्था का बतलाना सत्य को झूठलाना है।

६. धार्मिक स्थिति : ऋग्वैदिक समाज की धार्मिक स्थिति प्रायः सर्वविदित है। फिर भी संक्षिप्त जानकारी दे देना आवश्यक समझता हूँ। यज्ञ ऋग्वैदिक समाज का मुख्य धर्मिक कर्त्तव्य था। यज्ञ में धर्म के साथ विज्ञान का अनूठा समन्वय है क्योंकि यज्ञ वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित वायुमंडल के शोधनार्थ धार्मिक कार्य था और आज भी है। ऋग्वैदिक समाज बहुदेवतावादी न होकर एक ईश्वर को मानता था जैसा कि ऋग्वेद (१/१६४/४६) में कहा गया है– 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' अर्थात् एक ही ईश्वर को ज्ञानी जन अनेक नामों से पुकारते हैं।

७. वैज्ञानिक स्थिति :यदि ऋग्वेद के अध्ययन के आधार पर तत्कालीन वैज्ञानिक ज्ञान की चर्चा की जाय तो अलग से पुस्तकें लिखी जा सकती हैं या फिर विस्तृत निबंध लिखे जा सकते हैं। लेकिन विस्तार में न जाकर कुछेक उदाहरणों से ही इतिहासकारों की मिथ्या धारणाओं का खण्डन करना यहाँ पर्याप्त होगा। एक उदाहरण देखिए :

त्रयः पवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्वे इद्विदुः।
त्रयः स्कंभास स्कमितासः आरभे त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा।।
(ऋ. १–३४–२)

अर्थात् 'हे शीर्घगामी शक्तियों ! सुखपूर्वक ले जाने वाले यान में तीन वज्रतुल्य कलाचक्र हों तथा वह तीन स्तम्भों से स्तम्भित हो। ऐसे विमान को चन्द्रमा की यात्रा आरम्भ करने के क्रम में सभी निश्चित रूप से जानें कि तीन रात्रि एवं तीन दिन में उसे वहाँ ले जाया जा सकता है'।

इसके अतिरिक्त ऋ. (३/१४/१) तथा (३/५४/१३) में विद्युत–रथ यानी बिजली से चालित यान का वर्णन है। विमान एवं जलयान के लिए ऋग्वेद (४/३६/१) , (१/८८/१), (१/११६/३) तथा (१/११६/४) मंत्र भी द्रष्टव्य हैं। ऋग्वेद (१/११६/१५ में टूटी हुई टांगों के बदले लोहे की कृत्रिम टांग (पैर) प्रत्यारोपित करने का वर्णन है तो ऋ. (१/११६/१६) में नेत्र की शल्य–चिकित्सा तथा ऋ. (१/११७/१३) में वृद्ध को युवा करने का वर्णन मिलता है। इस तरह अनेक उदाहरण भरे पड़े हैं, लेकिन लेख का कलेवर हमें अनुमति नहीं देता कि हम उसका यहां वर्णन करें।

ऋग्वेद के उपरोक्त उदाहरणों के आलोक में इतिहासकारों की सभी मिथ्या धारणाएं खण्डित हो जाती हैं। अतः इतिहासकारों को तत्संबंधी अपने मिथ्या पूर्वाग्रह से मुक्त होकर सत्यपक्ष का अवलम्बन करना चाहिए, और सत्य यह है कि ऋग्वैदिक आर्य पूर्णतः शिक्षित, सुसम्य, ज्ञान–विज्ञान के ज्ञाता, गृह–निर्माण में दक्ष, कृषि–कार्य के जानकार, विवाहित जीवन जीने–वाले, वर्गीकृत समाज में सुचारू राजनीति के संचालक तथा जीवन के सम्पूर्ण तत्त्वों से अभिज्ञ धार्मिक जन थे। तभी तो उन्हें 'आर्य' अर्थात् श्रेष्ठ कहा गया है।

मो० – ०६४७०५८७३२२

www.thearyasamaj.org

गुरूकुल महाविद्यालय पूँठ – गढ़मुक्तेश्वर– हापुड़ के अधिष्ठाता स्वामी हरिहरा नन्द के देहावसान पर

शोक श्रद्धांजली – सभा

– प्रदीप शास्त्री गुरुकुल पूँठ

२५ दिसम्बर, २०१६, गुरूकुल महाविद्यालय पूठ की पवित्र यज्ञशाला में स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ स्वामी हरिहरानन्द जी गुरूकुल आश्रम के अधिष्ठाता थे अतः उन्हें मुखाग्नि देने वाले स्वामी अखिलानन्द सरस्वती को यजमान पद पर आसीन किया गया बाद में सर्व सम्मति से उन्हें स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी द्वारा एवं प्रबन्ध समिति के अधिकारियों द्वारा उनके स्थान पर अधिष्ठाता नियुक्त करके पगड़ी बांधकर तिलक किया गया। स्वामी जी के विषय में महेश्वर आर्य कोषाध्यक्ष ने विस्तार से अपने विचार दिये। आर्य समाज अटौला मेरठ के कोषाध्यक्ष राजपाल आर्य ने भजन सुनाये और स्वामी जी के विषय में संस्मरण भी सुनाये आर्य समाज चित्सौना बुलन्द शहर के राजवीर सिंह ने भी विचार दिये आर्य समाज स्थापना में भी स्वामी जी लम्बे समय तक रहे। आर्य समाज अटौला में उनकी सेवायें याद की जायेगीं।

आर्य समाज अमरोहा के अधिकारी एवं सदस्य भारी संख्या में आये और उन्हें श्रद्धांजलि देकर स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सभामन्त्री के जन्मोत्सव पर सभी ने माल्यार्पण किया उनके विषय में प्रधान हेतराम सागर जी ने एक कविता सुनाई मा० जगमाल सिंह आर्य भजनोपदेशक ने भी सुन्दर भजन सुनाये बाद में स्वामी जी ने सभी का आभार व्यक्त किया। प्रीतिभोज भण्डारे के साथ सभी ने प्रसाद ग्रहण किया आचार्य राजीव कुमार प्राचार्य जी ने सभी का पधारने पर आभार व्यक्त किया व्यवस्था दिनेश आचार्य जी ने की।

रजाई वितरण समारोह :

आर्य प्रतिनिध सभा उ०प्र० की इकाई आर्य समाज अमरोहा में १ जनवरी २०१७ को आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री वीरेन्द्र आर्य की स्मृति में उनके सुपुत्र आर्येन्द्र कुमार आर्य ने यज्ञ का आयोजन किया एवं ५१ रजाईयां वितरित की इस कार्यक्रम के ब्रह्मा स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती सभा मन्त्री जी रहे मुख्य अतिथि जिलाधिकारी अमरोहा श्री वेदप्रकाश जी ने महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज के नियम एवं सिद्धान्तों की प्रशंसा की रजाइयां वितरित करते हुए इसे संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य कर्तव्य बताया। प्रधान हेतराम सागर मंत्री, राजनाथ जी, विनय आर्य जी आर्येन्द्र आर्य ने उनका स्वागत, किया संचालन डा० अशोक आर्य जी ने किया आर्यजन एवं मातायें भारी संख्या में पधारे बाद में भोजन की व्यवस्था भी परिवार की ओर से सुन्दर रही।

– दिनेश कुमार आचार्य
गुरूकुल पूँठ

पृष्ठ -४ का शेष

हिन्दी के प्रचुर प्रयोग व .....

आते–जाते हैं प्रायः कई ऐसे शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्य लिखे होते हैं जो अशुद्ध होते हैं जैसे कृप्या लाइन में आएं या कृप्या करके लाइन में आएँ। कृप्या अशुद्ध है। इसकी सही वर्तनी है कृपया। कृप्या करके या कृपया करके प्रयोग भी अशुद्ध है। सही प्रयोग है कृपा करके। हमें लिखना चाहिए 'कृपया लाइन में आएँ' अथवा कृपा करके लाइन में में आएँ।' हम प्रायः काग़ज़ पर छपे या किसी बोर्ड पर लिखे अक्षरों अथवा शब्दों को सही मान लेते हैं अतः ऐसे में कोई भी अशुद्धि पूरे समाज को प्रभावित करेगी। एक बार मैंने जब एक युवक को उसकी गलत वर्तनी के लिए टोका तो उसने गलती मानने और उसको सुधारने की बजाय मुझसे कहा, ''सामने वाले दफ़्तर के बोर्ड पर देखोगे तो आपको पता चल जाएगा कि सही वर्तनी क्या है?''

अब उस युवक के इस बात को मानने का प्रश्न ही नहीं उठता था कि सामने वाले दफ़्तर के बोर्ड पर जो लिखा है वह गलत है। प्रायः देखने में आता है कि विज्ञापनों व विभिन्न प्रतिष्ठानों पर लगे बोड्र्स में वर्तनी संबंधी भयंकर त्रुटियाँ होती हैं। मोटे–मोटे अक्षरों में लिखा होने के कारण देखने वालों पर इनका बहुत अधिक गलत प्रभाव पड़ता है। एक बात और वो ये कि कोई भी नई चीज़ सिखाना सरल है जबकि गलत सीखी हुई चीज़ को सुधारना कठिन इसलिए हम प्रयास करें कि जहाँ भाषा विषयक गलती पूरे समाज को प्रभावित कर सकती हो वहाँ बहुत सतर्क व सावधान रहें। यदि हमारे दवाविक्रेता दवाइयाँ शब्द ठीक से लिखवाएँगे तो वो लोगों के स्वास्थ्य को सुधारने के साथ–साथ हिन्दी भाषा की उन्नति व विकास में भी सहयोगी हो सकेंगे। हिन्दी के विकास से जुड़ी सरकारी–ग़ैरसरकारी संस्थाओं व अकादमियों को भी इस संबंध में अपेक्षित क़दम उठाने चाहिएँ।

मो० : ०९५५५६२२३२३

पृष्ठ -३ का शेष

आर्य समाज और महर्षि जी.....

प्रश्न– कौन सी और घटनाएं हुई जिन्होंने मूल जी के दिल में वैराग्य पैदा कर दिया और आखिर में उन्हें घर छोड़कर जाने को बाधित कर दिया।

उत्तर– जब मूलजी १४–१५ साल के ही थे तो अचानक एक दिन उसकी छोटी बहिन को हैजा हो गया और अच्छी से अच्छी दवाई करने पर भी आराम न हुआ और वह मर गई। इस मौत को देखकर और सब तो जोर–जोर से रोने लगे पर बालक मूल जी एक कोने में खड़े होकर यही सोचते रहे कि किस तरह इस मौत से छुटकारा हो सकता है? इसके दो साल बाद उसके चाचा की मृत्यु हो गइ। वे मूल जी को बहुत प्यार करते थे। इससे उसका वैराग्य और भी दृढ़ हो गया और उसने, जैसे भी हो सके, मौत से छुटकारा पाने व अमर बनने का पक्का निश्चय कर लिया।

प्रश्न – मूल जी ने किस से और कब सन्यास लिया और सका उस समय क्या नाम रखा गया?

उत्तर– मूल जी ने स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती नामक एक विद्वान सन्यासी से लगभग २४ साल की आयु में सन्यास लिया और समय उसका नाम दयानन्द सरस्वती रखा गया।

प्रश्न– स्वामी दयानन्द के वे गुरू कौन थे जिनके विशेष प्रभाव से उन्होंने वैदिक धर्म के उद्धार करने का बीड़ा उठाया?

उत्तर– स्वामी दयानन्द के विशेष पूज्य गुरू स्वामी विरजानन्द जी थे, जो प्रज्ञाचुक्षु थे और मथुरा में रहा करते थे। उन्हीं से दयानन्द जी ने वेद–वेदांगों को विशेष रूप से पढ़ा तथा उन्होंने ही दयानन्द जी से गुरू–दक्षिणा मे तौर पर यह मांगा कि तुम सर्वत्र वेदों का प्रचार करो, ऋषियों के बनाए उत्तम ग्रन्थों को पढ़ने की लोगों को प्रेरणा दो तथा वेद–विरूद्ध सब बातों और रीति–रिवाजों को लोगों से छुडवा दो।

प्रश्न– ऋृषि दयानन्द ने विद्या समाप्त करके वैदिक धर्म के प्रचार और समाज सुधार के लिए क्या–क्या काम किये?

उत्तर– उन्होंने काशी आदि नगरों के बड़े–बड़े पाण्डितों से मूर्ति–पूजा आदि विषयों पर शास्त्रार्थ किए, जगह–जगह पर विशेष कर कुम्भ आदि मेलों में वैदिक धर्म पर जोरदार व्याख्यान दिए, वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की व्याख्या के लिए बहुत से ग्रन्थ लिखे। जिनमें से निम्नलिखित अधिक प्रसिद्ध है–

१. यजुर्वेद का संस्कृत में पूरा भाष्य किया जिसका पण्डितों ने पीछे हिन्दी का अनुवाद किया।

२. ऋग्वेद का छः मण्डल ६२ सूक्त तक संस्कृत भाष्य।

३. आर्याभिविनय –वैदिक प्रार्थनाओं की पुस्तक।

४. सत्यार्थ प्रकाश

५. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका।

६. संस्कार विधि।

७.भ्रमोच्छेदन, वेद–विरुद्ध मत–खण्डन इत्यादि कई छोटी पुस्तकें।

८. जीव रक्षा और मांस–निषेध प्रचार के लिए गोकरुणा निधि। इस पुस्तक द्वारा तथा महारानी विक्टोरिया के नाम लाखों हस्ताक्षरों सहित आवेदन पत्र द्वारा गोवध को बन्द कराने का भी महर्षि ने प्रसंशनीय प्रयत्न किया।

यह लेख मैंने वैदिक धर्म आर्य समाज प्रश्नोत्तरी पुस्तक जो प० धर्म देव जी सिद्धान्तालंकार, विद्या वाचस्पति द्वारा लिखित है। इसको विज्ञ पाठकों के लिए अति उपयोगी व लाभदायक समझकर लिखा है। इसमें पाठको को आर्य समाज और महर्षि सम्बन्धी काफी जानकारी बढ़ेगी।

मो० : ८२३२०२५५६०
६४३०१३५७६४

www.thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान- ०६४१२६७८५७१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, सम्पादक- ६४५१८८१७७७
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com
सम्पादक आर्य मित्र ई-मेल आईडी : samadakaryamitra@gmail.com

सेवा में,
.....
.....
.....

फकीरी नुस्खे

स्वास्थ्य चर्चा

श्री मधुसूदन राम जी शर्मा

(1) मधुमक्खी के काटने की दवा– आक (मदार) के दूध में लौंग, गोल मिर्च, शुद्ध कड़वा तेल या सरसों का दाना एक में रगड़कर तेल में फेंटकर लगायें। पीड़ा समाप्त हो जाएगी

(2) मनुष्य के पेट में दर्द – आकाशबवर पीसकर थोड़ा शुद्ध घी एक चम्मच जल के साथ पिला दिया जाय, दर्द मिट जायेगा।

(3) जहर खा लेने पर – अकोल्हा की छाल थोड़ा–सा पीसकर पिला दिया तो कैसा भी जहर हो उसे उलटी द्वारा बाहर निकाल देता है। यह दवा रामबाण है।

(4) वातरोग या गठिया – हरसिंगार की चार या पांच पत्ती पीसकर एक गिलास पानी से सुबह–शाम दो या तीन सप्ताह पीने से रोग समाप्त हो जायेगा।

(5) कान का दर्द – पीपल के पत्ते का रस कान में डालने से कान का दर्द, बहना तथा बहरापन चला जाता है।

(6) चौथिया, जड़ैया बुखार – कपास के पत्तों को सूंघने से चौथिया या जड़ैया बुखार जड़ से छूट जायेगा।

(7) सिरदर्द या सर्दी– पीपल के चार कोमल पत्तों का रस चूसिये। रस चूसते–चूसते दर्द या सर्दी जुकाम मिट जाएगा।

(8) खाँसी, दमा – पीपल के सूखे पत्तों को कूटकर कपड़छान कर ले तथा एक बड़े चम्मच शुद्ध मधु ११ ग्राम ६६४ मिलीग्राम में, २५ ग्राम पीपल–पत्ते का चूर्ण मिलाकर चाटने से खांसी, दमा दो सप्ताह में जड़ से समाप्त हो जाएगा।

(9) पीपल के फल के उपयोग – पीपल के फल को सुखाकर कूटकर कपड़छान कर ले। २५ ग्राम रोजाना गाय के दूध में मिलाकर सेवन करने से वह बल–वीर्य को बढ़ाता है, ताकत पैदा करता है और स्त्रियों के प्रसूत, प्रदर, मासिक धर्म की गड़बड़ी को भी यह दूर कर देता है।

(10) हैजा – अकवन (आक) को कुछ लोग मदार भी कहते हैं। अकवन की जड़ १०० मिलीग्राम, इतनी ही गोल मिर्च मिलाकर पीस ले और मटर के दाने के बारबर गोली बना ले। जिसे हैजा (कॉलरा) हो गया हो, उसे एक बार दो गोली खिलाये, हैजा तुरंत बंद हो जाएगा।

(11) गैस (घटसर्प) – सफेद अकवन के फूल सुखाकर तवे पर भून ले तथा चार फूल हथेली पर रगड़कर शहद मिलाये। ४ या ६ बूँद उस मरीज को चटाये, जिसे गैस (घटसर्प) की बीमारी हो, इससे ठीक हो जाती है। इस रोग में सीने में उठा दर्द सांप की आकृति में ऊपर उठकर कण्ठ पर जाकर रुक जाता है। ऐसे रोगी की श्वास रुक जाता है। ऐसे रोगी की श्वास घुटने लगती है। जब कण्ठ पर श्वास रुक जाती है, उसी समय इसे देना चाहिये, कण्ठ खुल जाएगा। पन्द्रह दिन तक तीन समय देने से बिल्कुल आराम हो जाता है।

(12) सूजाक – अकवन (मदार) की जड़ ११ ग्राम ६६४ मिलीग्राम, गोल मिर्च २५ ग्राम पीसकर गोली बनाये। एक–एक गोली रोजाना सुबह खाकर पानी पी ले तो गरमी, सूजाक जड़ से समाप्त हो जाता है।

(13) मलेरिया – तुलसी के सात पत्ते और गोल मिर्च सात दाने एक साथ चबाने से पांच बार में मलेरिया जड़ से चला जाता है। बुखार शीघ्र उतर जाता है, आराम हो जाता है।

(14) आंख की लाली– अकवन का दूध पैर के अंगूठे के नख पर लगाने से आंख की लाली फौरन साफ हो जाती है, परन्तु ध्यान रहे आँख में न लगने पाये।

(15) तुलसी के अद्भुत गुण– तुलसी के पत्ते और इसके बराबर गोल मिर्च मिलाकर पीस ले, मटर बराबर गोली बना ले, एक गोली दात पर रगड़ने से दांत दर्द, पायरिया आदि में फौरन आराम होगा। दस रोज में दांत से खून आना, मुख की दुर्गन्ध इत्यादि जड़ से जली जाती है। यह गोली बुखार में खाने से रामबाण काम करती है। बुखार उतर जाता है और तुरन्त आराम होता है।

(16) शक्तिवर्धन तथा भूख–प्यास लगना– चिरचिरी (अपामार्ग) का बीज १०० ग्राम रगड़कर साफ कर ले और गाय का दूध २५० ग्राम या एक किलो लेकर उसमें मिलाकर उसे गरम करे, जब दूध गाढ़ा हो जाय तब सेवन करे। दस रोज सेवन करने पर ताकत बढ़ेगी, भूख–प्यास भी लगेगी।

(17) बवासीर अक्सीर नुस्खे – (क) रसौत ११ ग्राम ६६४ मिलीग्राम, गेंदे का फूल ११ ग्राम ६६४ मिलीग्राम, मुनक्का ५० ग्राम तीनों को पीसकर सात गोली बना ले, एक गोली रोजाना सुबह पानी के साथ सेवन करे, जड़ से बवासीर चली जायेगी।

(ख) निरी (हरसिंगार) का बीज ५८ ग्राम ३१६ मिलीग्राम कुकरौंधा के रस में पीस ले। मटर बराबर नौसादर मिलाकर दस गोली बना ले। एक गोली नित्य ५८ ग्राम ३१६ मिलीग्राम गुलाबजल के साथ निगल जाय।

(ग) सूरन (जमींकन्द) को ओल भी कहते हैं, इसे घी में भूनकर खाने से बवासीर दूर हो जाती है।

(घ) काले तिल का चूर्ण मक्खन में मिलाकर खाने से बवासीर दूर होती है।

(ड़) मदार (आक) का पत्ता तथा सहिजन के जड़ की छाल इन दोनों को एक साथ पीसकर लेप करने से खूनी बवासीर दूर हो जाती है।

(18) खुजली–दाद– खुजली, दाद, घाव, एग्जिमा आदि चर्मरोगों में गेहूँ को जलाकर राख बना ले। इसे कपड़छान कर तेल (सरसों पीला) में भिगोकर लगाये तो खुजली आदि में तुरन्त आराम हो जाएगा।

(19) बिच्छू का काटना– (क) बिच्छू ने जहाँ काटा हो, वहाँ दूधी घास रगड़ देने से फौरन आराम हो जाता है।

(ख) मूली को पीसकर बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने से विष दूर हो जाता है।

(ग) सिन्धुवार के कोंपल को पीसकर बिच्छू के डंक मारने वाले स्थान पर लगाने से आराम हो जाता है।

(20) गठिया दर्द – सिन्धुवार (सैंधाकचरी) के पत्ते एक किलो पानी में खूब गरम कर दे। उस गरम जल से धोने से गठिया, कनकनी गांठ का दर्द तथा सूजन अच्छा हो जाता है।

साभार- वनौषधि माला

वैदिक इस्लाम

अजेय कुमार मेहरोत्रा

मैं
आदम को अपना पैगम्बर मानता हूँ
और
आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ
ना हिन्दू, ना मुस्लमां
ना मुसाई हूँ, ना ईसाई
ना ब्राह्मण हूँ, ना क्षत्रिय
न वैश्य हूँ, न शूद्र
आदमी हूँ, आदमी से प्यार करता हूँ।
मैं
आदम के धर्मग्रन्थ 'वेद' से अभिसिंचित हूँ
और आदमी हूँ, आदमी से प्यार करता हूँ।
मैं
वैदिक धर्मी हूँ
ओ३म का गीत गाता हूँ
और
वैदिक इस्लाम का प्रवक्ता हूँ।।
मैं
उस देश का नागरिक हूँ
जिसने मीरे–अरब को दिया था ज्ञान।
मैं
भारतीय हूँ
और
भारत वर्ष की जय–जयकार करता हूँ।।

मो० ६३०५६६०१४३

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बद्ध आर्य समाजों एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं को सूचित किया जाता है कि वे आर्य समाज में प्राप्त धन, चन्दा, दानादि का दशांश दिनांक २५ जनवरी २०१७ तक यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। बैंक ड्राफ्ट **आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ** के नाम से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ कार्यालय में जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें।

डॉ० धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।